भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3260
शुक्रवार, 12 जुलाई, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

ओ-स्मार्ट कार्यक्रम

3260. श्री बालाशोवरी वल्लभानेनीः

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) महासागर सेवाओं, प्रौद्योगिकी, अवलोकन, संसाधन मॉडलिंग और विज्ञान (ओ-स्मार्ट) कार्यक्रम के लक्ष्य और उद्देश्य क्या हैं;

(ख) उपरोक्त कार्यक्रम किस हद तक आंध्र प्रदेश (एपी) के मछलीपट्टनम जैसे तटीय क्षेत्रों में उपयोगकर्ता समुदायों की किस स्तर तक मदद करते हैं;

(ग) उक्त परियोजना की अनुमानित लागत कितनी है और इसके कब तक पूरा होने की संभावना है;

(घ) क्या अलवणीकरण संयंत्र, ओ-स्मार्ट कार्यक्रम के अंतर्गत स्थापित होने जा रहे हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार का आंध्र प्रदेश के विशाल तटीय क्षेत्रों में इसे स्थापित करने का विचार है; और

(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(डॉ. हर्ष वर्धन)

(क) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की "ओशन-सर्विसेज, मॉडलिंग, एप्लिकेशंस, रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी (ओ-स्मार्ट) संबंधी योजना का उद्देश्य (i) महासागर सूचना सेवाओं का एक सेट प्रदान करना (ii) समुद्री संसाधनों के सतत दोहन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना, (iii) फ्रंट-रैंकिंग अनुसंधान को बढ़ावा देना और (iv) वैज्ञानिक महासागर सर्वेक्षण करना है।

(ख) मछलीपट्टनम, आंध्र प्रदेश के लिए कोई विशेष कार्यक्रम नहीं है। तथापि, मछलीपट्टनम, आंध्र प्रदेश सहित भारत की तटीय आबादी को मत्स्य संभावित क्षेत्र (पीएफ़ज़ेड) परामर्शिका सेवाएं, समुद्र दशा पूर्वानुमान (ओएसएफ़) सेवाएं, सुनामी की पूर्व चेतावनी सेवाएँ, तूफान महोर्मि, उच्च तरंग अलर्ट सेवाएँ जैसी विभिन्न समुद्री सूचना सेवाएं भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (इंकॉइस) के माध्यम से प्रचालनात्मक मोड में दैनिक आधार पर प्रदान की जाती हैं। पीएफजेड की परामर्शिकाओं से मछुआरों को कम समय में और कम मानवीय प्रयासों से समुद्र में मछली पकड़ने के संभावित क्षेत्रों का पता लगाने में मदद मिलती है। मछुआरा समुदाय और तटीय आबादी की सुरक्षा के लिए ओएसएफ़ सेवाएं प्रदान की जाती हैं। मछुआरों को समुद्र में जाने का निर्णय लेने में ये सेवाएं अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। ये जानकारी एसएमएस, वॉयस कॉल, मोबाइल ऐप, ई-मेल और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से मछलीपट्टनम सहित आंध्र प्रदेश में स्थापित किए गए 25 डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम (डीडीएस) के माध्यम

से प्रसारित की जाती हैं। मछलीपट्टनम और इसके आसपास के क्षेत्रों में बेहतर सेवाओं और प्रेक्षणों के लिए ज्वारमापी, हाई फ्रिक्वेंसी कोस्टल रडार, ड्रिफ्टिंग ब्वॉयज, नौबन्ध बॉयज और ऑटोमैटिक डॉपलर करंट प्रोफ़ाइलर (एडीसीपी) जैसे उपकरणों का एक सेट तैनात किया गया है। महासागरजनित आपदाओं के कारण आने वाली संभावित तटीय बाढ़ जो तटीय आप्लावन कर सकती है, के संकेतात्मक मैप्स तैयार कर लिए गए हैं जिनमें मछलीपट्टनम सहित आंध्र प्रदेश के 2181 वर्ग किमी तटीय क्षेत्र को कवर किया गया है।

(ग) ओ-स्मार्ट के अंतर्गत तीन वर्षों (2017-2018, 2018-2019 और 2019-2020) के लिए पूरे देश हेतु घटकों की अनुमानित लागत 274.11 करोड़ रुपए हैं जो अभी भी जारी है। मार्च 2018 में पूरे हुए भारतीय मुख्य भूमि के संपूर्ण तट के लिए मल्टी हैज़र्ड वलनरेबिलिटी मैपिंग (एमएचवीएम) संबंधी राष्ट्रीय परियोजना का कुल बजट 43.66 करोड़ रुपए था।

(घ) जी, हाँ। कम तापमान वाले थर्मल विलवणीकरण संयत्र आधारित एक ओशन थर्मल एनर्जी कन्वेंशन (ओटीईसी) कवारत्ती, लक्षद्वीप के लिए प्रस्तावित है जिसकी प्रतिदिन की क्षमता 1 लाख लीटर पेयजल उत्पादन की होगी तथा इस संयंत्र की स्थापना के लिए एक साइट की पहचान कर ली गई है।

(ड़) जी, नहीं।

(च) आंध्र प्रदेश सहित भारत के तट के आसपास के क्षेत्रों में कम तापमान वाले थर्मल विलवणीकरण सयंत्र की स्थापना के लिए लगभग 400 मीटर की आवश्यक गहराई नहीं पाई गई है।

******